राष्ट्रीय परशुराम परिषद

संस्कृति • स्वाभिमान • संगठन • राष्ट्र सर्वोपरि

वर्ष -1, अंक - 1, जनवरी-2026

भगवान परशुराम के आदर्शों पर आधारित
राष्ट्र निर्माण एवं सनातन चेतना का अखिल अंतरराष्ट्रीय अभियान

स्थापना

सन् 2008 में 13, 14 एवं 15 जनवरी को माननीय इंद्रेश जी, वरिष्ठ प्रचारक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं हिमालय परिवार के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा परम पूज्य श्री यतीन्द्रानन्द गिरी जी महाराज के पावन नेतृत्व में भगवान परशुराम कुंड तीर्थ यात्रा का शुभारंभ हुआ। यह यात्रा अरुणाचल प्रदेश के लोहित ज़िले में स्थित भगवान परशुराम कुंड दर्शन से प्रारंभ हुई, जिसने परशुराम चेतना को एक संगठित वैचारिक आधार प्रदान किया। जो आगे चलकर एक राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप लेने की आधारभूमि तैयार की।

इसी वैचारिक प्रवाह को आगे बढ़ाते हुए सन 2015 में एक दिव्य एवं निर्णायक घटना घटित हुई, जब माननीय सुनील भराला जी को एक दिव्य स्वप्नानुभूति प्राप्त हुई, जिसमें स्वयं भगवान परशुराम के दर्शन हुए। इस स्वप्नानुभूति में भगवान परशुराम ने अपनी जन्मस्थली का संकेत देते हुए अपने गौरवशाली इतिहास, सनातन संस्कृति तथा परशुराम विचारधारा के पुनर्जागरण का स्पष्ट संदेश प्रदान किया। यहीं से परशुराम चेतना को एक निश्चित दिशा मिली और एक राष्ट्रीय पुनर्जागरण यात्रा का औपचारिक आरंभ हुआ, जिसका उद्देश्य केवल ऐतिहासिक शोध तक सीमित न रहकर परशुराम दर्शन और सनातन संस्कृति को पुनः समाज के केंद्र में स्थापित करना था।

इस दिव्य प्रेरणा को साकार रूप देने के लिए सन 2016 में उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक एवं पावन भूमि मेरठ में परशुराम स्वाभिमान सेना की स्थापना की गई, जो भगवान परशुराम के आदर्शों—तप, त्याग, शौर्य और न्याय—को जन-जन तक पहुँचाने का एक संगठित मंच बनी। इसी क्रम में मेरठ के जिमखाना मैदान में लगभग 20,000 से अधिक जनसमूह की उपस्थिति में एक भव्य ब्राह्मण महाकुंभ का आयोजन हुआ, जिसमें पूज्य यतीन्द्रानन्द गिरी जी महामंडलेश्वर एवं अनेक साधु-संतों का सान्निध्य प्राप्त हुआ तथा मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. दिनेश शर्मा जी, तत्कालीन उप मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश उपस्थित रहे, साथ ही विशिष्ट अतिथियों में तत्कालीन सांसद राज्यसभा शरद त्रिपाठी जी, डॉ. वंदना शर्मा तथा हरियाणा सरकार के तत्कालीन दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री सहित अनेक गणमान्य व्यक्तित्व सम्मिलित हुए। इस वैचारिक एवं संगठनात्मक विस्तार को औपचारिक एवं संवैधानिक स्वरूप प्रदान करने

Website

स्थापना

हेतु सन 2017 के जून माह में नई दिल्ली के ग्रेटर कैलाश स्थित आर्य समाज मंदिर में परशुराम स्वाभिमान सेना के नामकरण एवं संरचना को विस्तार देते हुए 'राष्ट्रीय परशुराम परिषद' की घोषणा की गई। इसी अवसर पर आयोजित ऐतिहासिक कार्यक्रम में

- राष्ट्रीय संत डॉ. राम विलास वेदांती जी महाराज
- मीरा उपाध्याय जी राष्ट्रीय अध्यक्ष, शक्ति वाहिनी
- डी.टी. शर्मा जी अध्यक्ष, परशुराम स्वाभिमान सेना
- आचार्य राधाकृष्णन जी, केंद्रीय मंत्री
- विनोद शर्मा जी राष्ट्रीय परशुराम न्यास, मुख्य अतिथि,
- शरद त्रिपाठी जी तत्कालीन सांसद, संत कबीर नगर

तथा अजय कुमार झा जी निर्वतमान राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष एवं वर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री राष्ट्रीय परशुराम न्यास सहित अनेक संत–महात्मा, समाजसेवी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। इस अवसर पर संवैधानिक व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए यह निर्णय लिया गया कि राष्ट्रीय परशुराम परिषद अपने कार्यों को न्यास एवं संगठन—दोनों रूपों में आगे बढ़ाएगी तथा भगवान परशुराम के आदर्शों पर आधारित राष्ट्रीय स्तर का जनजागरण अभियान संचालित करेगी।

इस क्रम की परिणति सन 2018 में हुई, जब 24 अगस्त 2018 को राष्ट्रीय परशुराम परिषद का विधिवत पंजीकरण संपन्न हुआ, जिसके उपरांत परिषद ने अपने उद्देश्यों को और अधिक व्यापक रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत किया तथा स्थापना के पश्चात अपने सबसे महत्वपूर्ण एवं व्यापक अभियान के रूप में भगवान परशुराम की जन्मस्थली की खोज का कार्य आरंभ किया, जो पुराणों, शास्त्रों, ऐतिहासिक ग्रंथों एवं जनश्रुतियों के गहन अध्ययन पर आधारित रहा। आज राष्ट्रीय परशुराम परिषद केवल एक संगठन नहीं, बल्कि एक सशक्त वैचारिक आंदोलन के रूप में स्थापित हो चुकी है, जो भारतीय संस्कृति, सनातन परंपरा एवं परशुराम दर्शन के संरक्षण, पुनर्जागरण और प्रचार–प्रसार हेतु निरंतर प्रतिबद्ध भाव से कार्यरत है।

Website

संस्थापक एवं संरक्षक
राष्ट्रीय परशुराम परिषद

पंडित श्री सुनील भराला जी

पंडित श्री सुनील भराला जी समकालीन सार्वजनिक जीवन के उन व्यक्तित्वों में हैं, जिनका जीवन संगठन, संस्कार और संघर्ष की त्रिवेणी से निर्मित हुआ है। वे राष्ट्रीय परशुराम परिषद के संस्थापक एवं संरक्षक हैं तथा बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से संस्कारित बाल संघ सेवक रहे हैं। वर्ष 1942 से चली आ रही पारिवारिक संघ परंपरा ने उनके चिंतन को राष्ट्रकेंद्रित और उनके आचरण को अनुशासनबद्ध बनाया है।

उन्होंने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किसी पद या प्रतिष्ठा की आकांक्षा से नहीं, बल्कि राष्ट्र और समाज के प्रति दायित्वबोध से किया। राम जन्मभूमि आंदोलन से लेकर किसान–मजदूर हितों, वंचित वर्गों के अधिकारों तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध चले संघर्षों में उनकी भूमिका सदैव सक्रिय और निर्णायक रही। वे उन नेतृत्वकर्ताओ में रहे हैं जिन्होंने जनसमस्याओं को मंचों से अधिक जमीन पर जाकर समझा और समाधान की दिशा में कार्य किया। अपने संघर्षशील जीवन में पंडित श्री सुनील भराला जी को राजनीतिक दमन, मुकदमों, गिरफ्तारी, कारावास और शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद उनका संकल्प और राष्ट्रनिष्ठा कभी कमजोर नहीं हुई। उनका जीवन इस सत्य को प्रमाणित करता है कि वैचारिक प्रतिबद्धता केवल कथन नहीं, बल्कि सतत साधना होती है।

वे उत्तर प्रदेश सरकार में श्रम कल्याण परिषद के अध्यक्ष (राज्यमंत्री स्तर) के रूप में कार्य कर चुके हैं। इस दायित्व के दौरान उन्होंने श्रमिक कल्याण, सामाजिक सुरक्षा और संवेदनशील प्रशासनिक संवाद को नई दृष्टि प्रदान की। शासन में रहते हुए भी उन्होंने संगठन, संत समाज और आम नागरिकों से अपना आत्मीय जुड़ाव बनाए रखा। राष्ट्रीय स्तर पर वे सदस्य, खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग, भारत सरकार जैसे महत्वपूर्ण दायित्व से भी जुड़े रहे हैं, जहाँ ग्रामीण विकास, स्वदेशी विचार और आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को सशक्त करने में उनकी भूमिका रही। इसके अतिरिक्त भारतीय जनता पार्टी में वे विभिन्न राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तरीय दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन कर चुके हैं, जिनमें राष्ट्रीय संयोजक / सह संयोजक (झुग्गी–झोपड़ी प्रकोष्ठ) तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (मजदूर संगठन) जैसे उत्तरदायित्व प्रमुख हैं।

राष्ट्रीय परशुराम परिषद की स्थापना उनके इस दृढ़ विश्वास से हुई कि समाज को संगठन, संस्कार और सांस्कृतिक चेतना के सूत्र में बाँधकर ही सामाजिक समरसता और राष्ट्रनिर्माण को स्थायी आधार दिया जा सकता है। परिषद के माध्यम से वे संत समाज, युवाओं, किसानों, श्रमिकों और समाज के विविध वर्गों को एक साझा वैचारिक मंच पर संगठित करने का कार्य कर रहे हैं।

एक संस्थापक एवं संरक्षक के रूप में पंडित श्री सुनील भराला जी का दृष्टिकोण दूरदर्शी, अनुशासित और राष्ट्रहित को केंद्र में रखने वाला है। उनके नेतृत्व में राष्ट्रीय परशुराम परिषद सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक क्षेत्र में निरंतर सशक्त होती जा रही है। उनका जीवन यह संदेश देता है कि जब सेवा संकल्प बन जाए और संगठन साधना—तब समाज स्वतः दिशा पा लेता है।

Twitter

राष्ट्रीय परशुराम परिषद
प्रमुख अनुसंगिक इकाइयाँ

1. भगवान परशुराम शोधपीठ
(तथ्य, शोध एवं वैचारिक प्रामाणिकता का प्रतिष्ठित केंद्र)

भगवान परशुराम शोधपीठ सनातन परंपरा, वैदिक और पुराणिक ग्रंथों के आधार पर परशुराम के जीवन, विचार और कर्मों का अध्ययन करता है। संगोष्ठी, व्याख्यान और शोध प्रकाशनों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय संदर्भ स्पष्ट करता है। यह विद्वानों और नई पीढ़ी को भारतीय बौद्धिक परंपरा और राष्ट्रबोध से जोड़ने का माध्यम है।

2. परशुराम स्वाभिमान सेना
(स्वाभिमान, अस्मिता और सांस्कृतिक संरक्षण की दृढ़ आवाज)

यह संगठन समाज के सम्मान, अधिकार और सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा करता है। आत्मबल, आत्मविश्वास और सामाजिक एकजुटता को सुदृढ़ करता है। गौ–संरक्षण, धार्मिक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाता है।

3. परशुराम शक्ति वाहिनी
(नारी सम्मान, सुरक्षा एवं आत्मनिर्भरता का सशक्त मंच)

यह वाहिनी महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और स्वावलंबन को सशक्त बनाती है। समाज में अन्याय और अधर्म के खिलाफ अनुशासित और कर्मशील रूप से कार्य करती है। महिलाओं को वैचारिक, शैक्षिक और व्यावहारिक रूप से सशक्त बनाने के प्रयास करती है।

4. राष्ट्रीय परशुराम परिषद धर्म प्रकोष्ठ
(सनातन धर्म की चेतना, परंपरा और मूल्यों का संरक्षण)

धर्म प्रकोष्ठ सनातन धर्म की शुद्ध परंपरा, धार्मिक मूल्यों और शास्त्रीय मान्यताओं के संरक्षण का कार्य करता है। यह धार्मिक भ्रांतियों और विकृतियों का शास्त्रसम्मत निराकरण करता है। समाज में आध्यात्मिक चेतना, नैतिक दृष्टि और सांस्कृतिक संस्कार सुदृढ़ करता है।

5. राष्ट्रीय परशुराम परिषद विधि प्रकोष्ठ
(कानूनी संरक्षण और झूठे तथ्यों का विधिसम्मत प्रतिकार)

विधि प्रकोष्ठ झूठे आरोपों और भ्रामक तथ्यों का कानूनी रूप से प्रतिकार करता है। यह विधिक परामर्श, आवश्यक कानूनी कार्यवाही और अधिकारों की रक्षा के माध्यम से न्याय और संवैधानिक मर्यादाओं की सुनिश्चितता करता है।

Facebook

धर्म, दर्शन और राष्ट्रबोध का विचार मंथन

भगवान परशुराम
72 घंटे का अनवरत राष्ट्रीय विद्वत सम्मेलन एवं संत समागम
दिनांक: 19–20 जून 2022
स्थान: हरिद्वार, उत्तराखंड

राष्ट्रीय परशुराम परिषद के तत्वावधान एवं माननीय पंडित सुनील भराला जी के मार्गदर्शन में हरिद्वार की पावन भूमि पर आयोजित भगवान परशुराम विषयक राष्ट्रीय विद्वत सम्मेलन एवं संत समागम वैचारिक दृष्टि से एक ऐतिहासिक आयोजन रहा। इस संगोष्ठी का मूल उद्देश्य भगवान परशुराम के जीवन, दर्शन और राष्ट्रधर्मी योगदान से जुड़ी उन भ्रांतियों एवं मिथकों का शास्त्रीय, ऐतिहासिक और तात्त्विक आधार पर निराकरण करना था, जो लंबे समय से समाज में प्रचलित रहे हैं। आयोजन ने भगवान परशुराम को केवल एक पौराणिक चरित्र के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय सामाजिक चेतना और न्याय परंपरा के जीवंत प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया।

दो दिवसीय इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देशभर से पधारे संतों, विद्वानों, शिक्षाविदों, इतिहासकारों तथा सामाजिक–राजनीतिक चिंतकों ने सक्रिय सहभागिता की। भगवान परशुराम के व्यक्तित्व, सामाजिक न्याय की अवधारणा, धर्मरक्षा, राष्ट्रबोध और सांस्कृतिक चेतना जैसे विषयों पर

Instagram

धर्म, दर्शन और राष्ट्रबोध का विचार मंथन

गहन शोधपत्र प्रस्तुत किए गए तथा सार्थक वैचारिक संवाद संपन्न हुआ। यह आयोजन केवल एक अकादमिक मंच तक सीमित न रहकर समाज को भगवान परशुराम के वास्तविक स्वरूप और उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता से जोड़ने का सशक्त माध्यम बना। संत समागम और बौद्धिक विमर्श के माध्यम से यह स्पष्ट संदेश दिया गया कि भगवान परशुराम भारतीय संस्कृति के एक कालजयी आदर्श, वैचारिक शक्ति और प्रेरणास्रोत हैं।

'शस्त्र नहीं, शास्त्र से समाज का पुनर्निर्माण'

भगवान परशुराम : अखंड शोध संगोष्ठी एवं संत संवाद

यह आयोजन इस मूल भावना को सुदृढ़ करता है कि समाज और राष्ट्र का पुनर्निर्माण केवल शक्ति प्रदर्शन से नहीं, बल्कि शास्त्रसम्मत चिंतन, नैतिक मूल्यों और वैचारिक स्पष्टता से संभव है। भगवान परशुराम के जीवन और दर्शन के माध्यम से प्रस्तुत यह संदेश आज के सामाजिक और राष्ट्रीय परिदृश्य में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहाँ सांस्कृतिक चेतना और वैचारिक दृढ़ता की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है।

अखिल भारतीय ब्राह्मण अधिकार एवं राष्ट्रीय चिंतन संगोष्ठी

दो दिवसीय वैचारिक मंथन एवं सामाजिक संवाद

दिनांक : 8-9 अक्टूबर 2022

स्थान : वृंदावन, उत्तर प्रदेश

'अधिकार, आत्मसम्मान और संगठन – यही समाज की वास्तविक शक्ति है।'

वृंदावन की पावन और आध्यात्मिक भूमि पर राष्ट्रीय परशुराम परिषद के तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय ब्राह्मण अधिकार एवं राष्ट्रीय चिंतन संगोष्ठी वैचारिक दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी प्रभाव वाला आयोजन सिद्ध हुई। इस दो दिवसीय संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य ब्राह्मण समाज की वर्तमान सामाजिक स्थिति का सम्यक एवं यथार्थ मूल्यांकन करना, समाज से जुड़े अधिकारों और दायित्वों पर गंभीर विमर्श स्थापित करना। भविष्य के लिए सुदृढ़, संगठित और राष्ट्रहितकारी दिशा पर राष्ट्रीय स्तर पर संवाद को गति देना था। आयोजन ने आत्मचिंतन के साथ-साथ संगठनात्मक चेतना को भी सशक्त रूप में सामने रखा।

You Tube

'परशुराम के विचार – समाज के नव उत्थान का आधार'

इस केंद्रीय विचार को आधार बनाकर आयोजित सम्मेलन में देश के विभिन्न राज्यों से पधारे विद्वान, संत, सामाजिक चिंतक, संगठन पदाधिकारी तथा युवा प्रतिनिधियों ने सक्रिय सहभागिता की। भगवान परशुराम के जीवन–दर्शन को समकालीन सामाजिक परिस्थितियों में प्रासंगिक बताते हुए उनके आदर्शों को समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक पुनर्निर्माण से जोड़ने पर विशेष बल दिया गया। विचार–विमर्श में यह स्पष्ट किया गया कि परशुराम दर्शन केवल ऐतिहासिक संदर्भ नहीं, बल्कि सामाजिक संतुलन और न्याय की एक जीवंत परंपरा है।

दो दिवसीय चिंतन वर्ग के दौरान संगठन के विस्तार, समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक भूमिका, युवाओं की भागीदारी तथा वैचारिक सशक्तिकरण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहन और सार्थक चर्चा हुई। वक्ताओं ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि संगठित चेतना के अभाव में समाज अपनी भूमिका को प्रभावी रूप से निभा नहीं सकता, और इसलिए संगठन, विचार और संकल्प—तीनों का समन्वय आवश्यक है।

इस अवसर पर माननीय पंडित सुनील भराला जी ने अपने संबोधन में स्पष्ट किया कि भगवान परशुराम का दर्शन केवल अतीत की गाथा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक सशक्त मार्गदर्शक है। उन्होंने युवाओं से न्याय, शौर्य, तप और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान करते हुए समाज और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आग्रह किया।

'संगठन से संकल्प, संकल्प से समाज निर्माण' इस मूल भावना के साथ संपन्न हुई यह राष्ट्रीय चिंतन संगोष्ठी ब्राह्मण समाज के आत्मचिंतन, संगठनात्मक सुदृढ़ता और सांस्कृतिक चेतना को नई दिशा देने वाला एक प्रेरणादायी प्रयास सिद्ध हुई, जिसने विचार से कर्म और कर्म से राष्ट्रनिर्माण तक की यात्रा को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया।

You Tube

राष्ट्र चेतना का उद्घोष
काशी से घोषित भगवान परशुराम की जन्मभूमि

दिनांक : 20 नवंबर 2022
स्थान : काशी

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का निर्णायक क्षण

'शोध, शास्त्र और संतों की सहमति से—20 नवंबर 2022 को काशी से एक ऐतिहासिक उद्घोष हुआ।

भारतीय सनातन परंपरा के अमर प्रतीक, धर्म और न्याय के अधिष्ठाता भगवान परशुराम की जन्मभूमि, तपस्थली और युद्धस्थली को लेकर राष्ट्रीय परशुराम परिषद द्वारा की गई ऐतिहासिक घोषणा ने राष्ट्रव्यापी सांस्कृतिक चेतना को एक नई दिशा प्रदान की। यह गौरवपूर्ण उद्घोष 20 नवंबर 2022 को बाबा विश्वनाथ की पावन नगरी काशी में संपन्न हुआ, जिसे भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के एक निर्णायक और दूरगामी प्रभाव वाले क्षण के रूप में देखा जा रहा है। यह केवल एक वैचारिक वक्तव्य नहीं, बल्कि सनातन परंपरा के ऐतिहासिक सत्य के पुनर्स्थापन का सशक्त प्रयास है।

राष्ट्रीय परशुराम परिषद द्वारा स्थापित भगवान परशुराम शोध पीठ ने विगत पाँच वर्षों तक भगवान परशुराम के जीवन से जुड़े ग्रंथों, पुराणों, ऐतिहासिक संदर्भों, लोकपरंपराओं और भौगोलिक संकेतों पर गहन एवं सतत अनुसंधान किया। शास्त्रीय प्रमाणों, ऐतिहासिक साक्ष्यों

Instagram

और देशभर के विद्वानों की सर्वसम्मति के आधार पर यह स्पष्ट उद्घोष किया गया कि भगवान परशुराम की जन्मभूमि केवल और केवल मध्य प्रदेश में इंदौर के निकट स्थित जानापाव है। यह उद्घोष किसी मत या मान्यता पर आधारित नहीं, बल्कि शोध, तर्क और प्रमाण से पुष्ट निष्कर्ष का सार्वजनिक उद्घाटन है।

काशी की पावन भूमि पर हुआ यह उद्घोष राष्ट्रीय परशुराम परिषद के पाँच वर्षों के संकल्प व्रत की पूर्णता का प्रतीक भी बना। परिषद ने यह स्पष्ट किया कि भगवान परशुराम के जीवन से जुड़ी जन्मस्थली, तपोस्थली और युद्धस्थली से संबंधित समस्त निष्कर्ष अब राष्ट्र के समक्ष प्रामाणिक, व्यवस्थित और शोधाधारित रूप में प्रस्तुत हैं। इस उद्घोष के माध्यम से इतिहास की विकृत व्याख्याओं को दूर कर सनातन परंपरा की प्रामाणिक धारा को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया गया।

इस ऐतिहासिक अवसर पर पूजनीय संतों, आचार्यों और देशभर से पधारे विद्वानों का दिव्य एवं गरिमामयी सानिध्य प्राप्त हुआ। वक्ताओं ने भगवान परशुराम के शस्त्र और शास्त्र के अद्भुत संतुलन, उनकी न्यायप्रियता, धर्मरक्षा की चेतना और राष्ट्रबोध पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। विद्वत समाज ने एक स्वर में यह स्वीकार किया कि भगवान परशुराम का व्यक्तित्व भारतीय संस्कृति के नैतिक और वैचारिक आधार को समझने की कुंजी है।

You Tube

इस उद्घोष के साथ यह महत्वपूर्ण घोषणा भी की गई कि भगवान परशुराम की जन्मभूमि जानापाव में भव्य मंदिर का निर्माण किया जाएगा। यह स्थल भविष्य में केवल एक धार्मिक केंद्र नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति, शोध, आध्यात्मिक चेतना और वैचारिक जागरण का प्रमुख केंद्र बनेगा। मंदिर निर्माण की यह योजना भगवान परशुराम के विचारों और जीवन-दर्शन को स्थायी स्वरूप देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

काशी से हुआ यह ऐतिहासिक उद्घोष केवल एक धार्मिक या सांस्कृतिक घोषणा भर नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक आत्मबोध की पुनर्प्रतिष्ठा है। यह आयोजन आने वाली पीढ़ियों के लिए भगवान परशुराम के विचार, त्याग, तप और धर्मबोध को समझने का एक स्थायी संदर्भ बनेगा तथा भारतीय इतिहास के स्वर्णिम अध्याय के रूप में स्मरण किया जाएगा।

Instagram

सामाजिक एकता एवं सम्मान की रक्षा हेतु जनआंदोलन

'दिल्ली चलो' – घृणास्पद नारों के विरोध में सशक्त जनप्रदर्शन

दिनांक: 15 दिसंबर 2022

स्थान: दिल्ली

15 दिसंबर 2022 को समाज को विभाजित करने वाले और घृणास्पद नारों के विरुद्ध 'दिल्ली चलो' आंदोलन का आयोजन किया गया। 'ब्राह्मण भारत छोड़ो' जैसे आपत्तिजनक और सामाजिक सौहार्द को ठेस पहुँचाने वाले नारों के विरोध में यह जनआंदोलन सम्मान, एकता और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के उद्देश्य से खड़ा हुआ। आंदोलन का उद्देश्य किसी टकराव को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि समाज में फैल रही घृणा और अपमानजनक मानसिकता के विरुद्ध शांतिपूर्ण, संवैधानिक और सशक्त प्रतिरोध दर्ज कराना था। इस आंदोलन के अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों से हजारों कार्यकर्ता दिल्ली पहुँचे और जंतर–मंतर पर शांतिपूर्ण किंतु प्रभावशाली धरना–प्रदर्शन एवं मार्च आयोजित किया गया। यह प्रदर्शन कुछ असामाजिक एवं राष्ट्र–विरोधी प्रवृत्तियों द्वारा शैक्षणिक परिसरों के नाम पर समाज विशेष के प्रति फैलाए जा रहे द्वेष, अपमान और वैचारिक विषाक्तता के विरोध में किया गया। प्रदर्शनकारियों ने संयम, अनुशासन और लोकतांत्रिक मयार्दाओं का पालन करते हुए अपनी बात को स्पष्ट रूप से राष्ट्र के समक्ष रखा।

इस ऐतिहासिक जनआंदोलन के माध्यम से एक स्पष्ट और दृढ़ संदेश दिया गया कि ब्राह्मण समाज अपमान नहीं, सम्मान चाहता है; विभाजन नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता और पारस्परिक सद्भाव का समर्थक है। आंदोलन ने यह भी रेखांकित किया कि किसी भी समाज के विरुद्ध घृणा फैलाना न केवल सामाजिक ताने–बाने को कमजोर करता है, बल्कि राष्ट्र की एकता और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए भी घातक है। 'दिल्ली चलो' आंदोलन सामाजिक सम्मान, लोकतांत्रिक अधिकारों और राष्ट्रीय एकता की रक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी पहल के रूप में सामने आया। यह जनआंदोलन इस बात का प्रमाण बना कि संयमित, संगठित और विचारपूर्ण प्रतिरोध के माध्यम से समाज अपनी अस्मिता, गरिमा और मूल्यों की रक्षा प्रभावी ढंग से कर सकता है।

You Tube

भगवान परशुराम कुंड तीर्थ यात्रा

दिनांक: 14 जनवरी 2023 से 19 जनवरी 2023
स्थान: अरुणाचल प्रदेश

'आस्था का प्रवाह, संस्कृति का उत्थान'

भगवान परशुराम कुंड तीर्थ यात्रा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान मात्र नहीं रही, बल्कि यह सनातन संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना और आध्यात्मिक जागरण की एक विराट एवं प्रेरणादायी यात्रा के रूप में सामने आई। इस यात्रा ने भारत की उस सांस्कृतिक आत्मा को अभिव्यक्त किया, जो भौगोलिक सीमाओं से परे जाकर समाज को जोड़ने, एकता का भाव जाग्रत करने और सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करने का कार्य करती है। परशुराम कुंड जैसे पावन तीर्थ की ओर बढ़ता यह यात्रा–पथ श्रद्धा, तप और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक बन गया।

दिनांक 14 जनवरी 2023 से 19 जनवरी 2023 तक अरुणाचल प्रदेश की पावन भूमि पर सम्पन्न हुई इस तीर्थ यात्रा ने अपने स्वरूप और व्यापक सहभागिता के कारण विशेष महत्व प्राप्त किया। देश के विभिन्न प्रांतों से आए श्रद्धालुओं की उपस्थिति ने इसे एक राष्ट्रीय स्वरूप

भगवान परशुराम कुंड तीर्थ यात्रा

प्रदान किया। कुल 106 सदस्यों का संगठित दल, यात्रा के संयोजक एवं राष्ट्रीय सह–संयोजक श्री मुकेश भार्गव जी के कुशल नेतृत्व में परशुराम कुंड की ओर प्रस्थान कर श्रद्धा, अनुशासन और संगठनात्मक एकता का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता रहा।

इस दिव्य यात्रा में परशुराम शक्ति वाहिनी की सक्रिय और समर्पित सहभागिता विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। प्रीति जी, अनीता जी, रुचि जी सहित अनेक पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने सेवा भाव, अनुशासन और सांस्कृतिक मर्यादाओं का अनुकरणीय परिचय दिया। पूरी यात्रा के दौरान संगठनात्मक समन्वय, आपसी सहयोग और सेवा की भावना ने यह स्पष्ट किया कि धार्मिक यात्राएँ सामाजिक एकता और संगठन की शक्ति को सुदृढ़ करने का प्रभावी माध्यम भी होती हैं।

भगवान परशुराम कुंड तीर्थ यात्रा ने यह सिद्ध किया कि सनातन परंपराएँ आज भी समाज को एक सूत्र में पिरोने की अपार क्षमता रखती हैं। यह यात्रा श्रद्धा, सेवा, संगठन और संस्कृति के समन्वय का जीवंत प्रतीक बनकर उभरी, जिसने यह संदेश दिया कि आध्यात्मिक चेतना जब राष्ट्रीय भाव के साथ जुड़ती है, तो वह समाज और राष्ट्र दोनों को सशक्त दिशा प्रदान करती है।

Instagram

'चलो जन्मभूमि जानापाव' अभियान

दिनांक : 1 मार्च 2023

स्थान : जानापाव, इंदौर (मध्य प्रदेश)

परशुराम अस्मिता - सांस्कृतिक अधिकार - राष्ट्रीय चेतना

'चलो जन्मभूमि जानापाव' अभियान के अंतर्गत देशभर से हजारों की संख्या में पहुँचे कार्यकर्ताओं और श्रद्धालुओं ने भगवान परशुराम की पावन जन्मभूमि जानापाव पर एकत्र होकर अपनी सांस्कृतिक अस्मिता, ऐतिहासिक अधिकार और राष्ट्रीय चेतना का सशक्त उद्घोष किया। यह अभियान केवल एक जनसमूह का आयोजन नहीं, बल्कि सनातन परंपरा, सांस्कृतिक स्वाभिमान और ऐतिहासिक सत्य की पुनर्प्रतिष्ठा का राष्ट्रीय प्रयास बनकर सामने आया। जानापाव की भूमि पर उमड़ा यह जनसैलाब भगवान परशुराम के प्रति श्रद्धा के साथ-साथ सांस्कृतिक आत्मबोध का प्रतीक भी था।

राष्ट्रीय परशुराम परिषद के तत्वावधान में आयोजित इस भव्य राष्ट्रीय अधिवेशन में भगवान परशुराम की जन्मभूमि जानापाव से संबंधित पौराणिक, पुरातात्विक और भौतिक साक्ष्यों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया गया। प्रेस प्रतिनिधियों के समक्ष रखे गए ये प्रमाण वर्षों के शोध, ऐतिहासिक अध्ययन और शास्त्रीय विवेचन का निष्कर्ष थे, जिनका उद्देश्य केवल

You Tube

घोषणा करना नहीं, बल्कि तथ्यों के माध्यम से सत्य को राष्ट्र के समक्ष स्थापित करना था। इस आयोजन ने यह स्पष्ट किया कि जानापाव की पहचान भावनाओं पर नहीं, बल्कि इतिहास और प्रमाणों पर आधारित है।

इस अवसर पर आयोजित प्रेस वार्ता में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व राज्य मंत्री माननीय पंडित श्री सुनील भराला जी, प्रो. राजाराम यादव जी (पूर्व कुलपति), डॉ. वेदव्रत तिवारी जी (संयोजक – भगवान परशुराम शोध पीठ) तथा कैप्टन राज द्विवेदी जी (प्रदेश अध्यक्ष – राष्ट्रीय परशुराम परिषद, मध्य प्रदेश) सहित अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी एवं गणमान्य जन उपस्थित रहे। वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि जानापाव केवल एक भौगोलिक स्थल नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना, शौर्य, तप और धर्मपरायणता का जीवंत प्रतीक है, जिसे उसका यथोचित राष्ट्रीय सम्मान और पहचान मिलनी चाहिए।

'इतिहास बोले, प्रमाण साथ – जानापाव पर परशुराम'

इस मूल भाव के साथ संपन्न हुआ 'चलो जन्मभूमि जानापाव' अभियान भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में दर्ज हुआ। यह अभियान आने वाली पीढ़ियों के लिए यह संदेश छोड़ गया कि सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा केवल स्मृति से नहीं, बल्कि शोध, प्रमाण और संगठित राष्ट्रीय चेतना से सुनिश्चित होती है।

Instagram

अवतरण दिवस विशेष

दिनांक : 22 अप्रैल 2023

स्थान : जानापाव, इंदौर (मध्य प्रदेश)

101 कुंडीय भगवान परशुराम महायज्ञ
सनातन शक्ति • संगठन की एकता • राष्ट्र चेतना

'धर्म की धार, राष्ट्र का आधार – परशुराम अवतार'

सनातन संस्कृति की अक्षुण्ण परंपरा, संगठन की दृढ़ एकता और राष्ट्र के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भव्य साक्ष्य बना—101 कुंडीय भगवान परशुराम महायज्ञ। भगवान परशुराम जी की अवतरण स्थली जानापाव में आयोजित यह दिव्य आयोजन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सनातन चेतना के विराट स्वरूप, सामाजिक एकता और राष्ट्रीय आत्मबोध का प्रभावशाली प्रकटीकरण सिद्ध हुआ। महायज्ञ का प्रत्येक क्षण धर्म, तप और सांस्कृतिक गौरव की अनुभूति कराता रहा।

You Tube

राष्ट्रीय परशुराम परिषद द्वारा आयोजित परशुराम जन्मोत्सव के इस पावन अवसर पर एक ऐतिहासिक क्षण तब साक्षात हुआ, जब परिषद के संस्थापक, वरिष्ठ भाजपा नेता एवं उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व राज्य मंत्री माननीय पंडित सुनील भराला जी ने मध्य प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान जी को भगवान परशुराम का प्रतीक 'फरसा' भेंट कर सम्मानित किया। यह क्षण धर्म, परंपरा और राष्ट्र नेतृत्व के सम्मानजनक संगम का प्रतीक बनकर उभरा, जिसने सांस्कृतिक मूल्यों और राजनीतिक उत्तरदायित्व के समन्वय को रेखांकित किया।

महायज्ञ के अवसर पर जानापाव धाम के नव निर्माण की दिशा में भी महत्वपूर्ण पहल सामने आई। माननीय पंडित सुनील भराला जी ने मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान जी के साथ भगवान परशुराम की जन्मस्थली जानापाव में मंदिर के जीर्णोद्धार तथा विभिन्न विकास एवं निर्माण कार्यों की कार्ययोजना का अवलोकन किया। यह पहल आने वाली पीढ़ियों के लिए सनातन आस्था, सांस्कृतिक गौरव और ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित एवं सुदृढ़ करने की दिशा में एक दूरदर्शी कदम के रूप में देखी गई।

इस ऐतिहासिक आयोजन की गरिमा देश के प्रमुख जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति से और अधिक बढ़ी। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान जी, केंद्रीय मंत्री माननीय श्री फग्गन सिंह कुलस्ते जी, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव माननीय श्री कैलाश विजयवर्गीय जी तथा रोहतक से सांसद माननीय श्री अरविंद शर्मा जी की सहभागिता ने आयोजन को राष्ट्रीय महत्व प्रदान किया। जनप्रतिनिधियों की यह उपस्थिति सनातन संस्कृति और राष्ट्रहित के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रतीक बनी।

'जहाँ धर्म है, वहाँ परशुराम हैं;
जहाँ परशुराम हैं, वहाँ राष्ट्र सुरक्षित है।'

इस संकल्प और संदेश के साथ संपन्न हुआ 101 कुंडीय भगवान परशुराम महायज्ञ यह स्पष्ट करता है कि सनातन संस्कृति केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि राष्ट्र के वर्तमान और भविष्य की सशक्त आधारशिला है। यह आयोजन भारतीय सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण का एक स्मरणीय अध्याय बनकर इतिहास में अंकित हुआ।

You Tube

श्रद्धापूर्ण स्मरण

राष्ट्रीय पशुराम परिषद को निरंतर सेवा, त्याग और संगठनात्मक प्रतिबद्धता के माध्यम से जिन ऊँचाइयों तक पहुँचाया गया, उसमें हमारे चारों मार्गदर्शक व्यक्तित्वों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय रही है। ये चारों परिषद की चेतना, दिशा और मूल्यों के आधार रहे, जिन्होंने अपने आचरण, विचार और कर्म से संगठन को सशक्त बनाया। प्रत्येक ने अपने–अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ किया तथा परिषद को समाज में प्रतिष्ठा और विस्तार प्रदान किया। दुर्भाग्यवश, एक साथ इन चारों मार्गदर्शक व्यक्तित्वों का न रहना हमारी संस्था के लिए गहरा आघात और अपूरणीय क्षति है। उनके अभाव से उत्पन्न रिक्तता को शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। हम उन्हें विनम्र नमन एवं श्रद्धापूर्ण स्मरण अर्पित करते हुए यह संकल्प लेते हैं कि उनके आदर्शों, मूल्यों और योगदान को अपने कार्यों के माध्यम से जीवंत बनाए रखेंगे। उनकी स्मृतियाँ सदैव राष्ट्रीय पशुराम परिषद की यात्रा को दिशा और प्रेरणा देती रहेंगी।

डॉ. राम विलास वेदान्ती जी महाराज
मार्गदर्शक - राष्ट्रीय परशुराम परिषद

डॉ. राम विलास वेदान्ती जी महाराज एक प्रख्यात सनातन धमार्चार्य, विचारक एवं समाजसेवी थे। वे सनातन संस्कृति, वैदिक परंपराओं और राष्ट्रहित से जुड़े विषयों पर सतत मार्गदर्शन प्रदान करते रहे हैं। धार्मिक–सांस्कृतिक चेतना के प्रसार के साथ–साथ उन्होंने समाज में नैतिक मूल्यों, धर्मबोध और संगठनात्मक एकता को मजबूत करने का कार्य किया है।

राष्ट्रीय परशुराम परिषद के मार्गदर्शक के रूप में उनका योगदान संगठन को वैचारिक दिशा, सांस्कृतिक दृष्टि और राष्ट्रवादी प्रेरणा प्रदान करता है। उनका जीवन धर्म, समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पण का प्रेरणास्रोत है।

Instagram

आचार्य श्री नटवरलाल जी जोशी
विशेष आमंत्रित सदस्य, राष्ट्रीय परशुराम परिषद

श्री आचार्य श्री नटवरलाल जी जोशी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सनातन धर्म की सेवा को समर्पित किया वे आजीवन श्री ऋषिकुल ब्रह्मचार्य के अधिक (प्रधान) के रूप में कार्यरत रहे और साथ ही अखिल भारतीय आध्यात्मिक उत्थान मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष के दायित्व का भी निर्वहन किया। राष्ट्रीय परशुराम परिषद की (श्री परशुराम राष्ट्रीय शोध पीठ) के माध्यम से वे भगवान परशुराम के जीवन, उनसे जुड़े स्थलों तथा उनके कार्यों के ऐतिहासिक निर्धारण हेतु निरंतर शोध कार्य में संलग्न रहे। उन्होंने हजारों बालकों का उपनयन संस्कार कराकर उन्हें धर्म–सेवा के मार्ग पर अग्रसर किया। श्री आचार्य नटवरलाल जी जोशी का जीवन सनातन संस्कृति, धर्म–सेवा, सामाजिक समरसता और राष्ट्रचिंतन का प्रेरणादायी उदाहरण है।

श्री कामेश्वर चौपाल जी
विशेष आमंत्रित सदस्य - राष्ट्रीय परशुराम परिषद

श्री कामेश्वर चौपाल जी ने श्री राम जन्मभूमि ट्रस्ट के सदस्य के रूप में कार्यरत थे। वे सामाजिक समरसता और राष्ट्रनिर्माण के प्रति समर्पित एक प्रतिष्ठित व्यक्तिव थे। वे श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से जुड़े रहे हैं और समाज के वंचित व कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए निरंतर कार्य करते रहे हैं। उनका जीवन सादगी, सेवा और राष्ट्रहित को समर्पित रहा है। श्री कामेश्वर चौपाल जी राष्ट्रीय परशुराम परिषद के विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में भी हरिद्वार में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जहाँ उनके अनुभव और विचार संगठन को वैचारिक व सामाजिक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

You Tube

विनोद शर्मा जी
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, राष्ट्रीय परशुराम परिषद

विनोद शर्मा जी का मूल जन्म सिम्भावली में हुआ था। वे नोएडा में निवासरत रहे तथा सेक्टर–121, नोएडा में अपना एक निवास स्थापित किया। संस्थान से वे आरंभ से ही तन–मन–धन से जुड़े रहे और प्रत्येक कार्य को अपने निजी संसाधनों से पूर्ण समर्पण भाव से करते थे। वे विभिन्न राज्यों में भ्रमण कर भगवान परशुराम जी के जीवन, गुणों एवं आदर्शों का प्रचार–प्रसार करते रहे। दिनांक 23 नवम्बर 2025 को उनका निधन हो गया।

शिव कुमार शर्मा जी
जिलाध्यक्ष, मेरठ राष्ट्रीय परशुराम परिषद

शिव कुमार शर्मा जी का जन्म गाँव सानधन जिला मेरठ में एक साधारण परिवार में हुआ। बचपन से ही उनका धर्म के प्रति गहरा जुड़ाव रहा। वर्ष 2015 में राष्ट्रीय परशुराम परिषद के गठन के साथ वे प्रारंभिक रूप से संगठन की सेवा–सेना से जुड़े और संगठन को मजबूत करने में सक्रिय भूमिका निभाई। वे सदैव धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति रहे। गढ़मुक्तेश्वर में गंगा स्नान के दौरान ही उनका 2025 मे देहावसान हुआ। उनका यह सपना और चिंता हमेशा रही कि उनका पूरा परिवार धर्म, संस्कार और सेवा के मार्ग पर स्थापित रहे—जिस विषय पर वे निरंतर चर्चा और मार्गदर्शन करते रहते थे।

Instagram

हमारे आराध्य भगवान परशुराम

संपर्क करे

फोन नंबर : 9999145912

इमेल : rashtriyaparshuramparishad@gmail.com

पता : S-124,Greater Kailash I,second Floor , Delhi

You Tube Instagram Facebook Twitter